

Padma Shri



SHRI ANNAVARAPU RAMASWAMY

Shri Annavarapu Ramaswamy or Annavarapu, as he is fondly called, is an eminent senior top-ranking violinist in Carnatic Music in India, whose musical journey has entered into the eighth decade. He is directly the fifth in the line of disciples of Saint Thyagaraja.

2. Born on 23rd March, 1926 in a family of musicians in Andhra Pradesh, Shri Annavarapu started learning music at a very tender age first from Late Shri Maganti Jagannadha Chowdary of Somavarappadu, his native village in Andhra Pradesh and later from 'Gayaka Sarvabhaumatate Shri Parupalli Rama Krishnaiah Pantulu of Vijayawada, a musician and guru of repute. The rigorous training received by him in the Gurukula Sampradaya helped him to blossom into one of the most sought-after violinists in India. He worked as a staff artist in All India Radio, Vijayawada ever since its inception in 1948 until he retired in 1986.

3. Shri Annavarapu, during his illustrious career, has accompanied every musician of repute in India that include not only legends of Carnatic music like Parupalli Ramakrishnaiah Pantulu, Ariyakudi Ramanuja Iyengar, Chembai Vaidyanatha Bhagavatar, Maharajapuram Viswanadha Iyer, Semmangudi Srinivasa Iyer, G. N. Balasubramaniam, Madurai Mani Iyer, Dr. Balamurali Krishna, T.R. Mahalingam, Alathur Brothers, etc., but also noted Hindustani vocalists like Pandit Vinayaka Rao Patwardhan, Bheemsen Joshi and Pandit Jasraj. His mastery over Sruthi and Laya coupled with his highest quality of accompanying skills that helped the main artist perform at the best of his/her ability made him the preferred violinist for many musicians. He has also performed innumerable solo concerts both on Violin and Viola across India and abroad. He has also enthralled audiences in USA, Canada, UK, France, Oman, Bahrain, Dubai, Doha, Singapore, Malaysia and Sri Lanka etc. Shri Annavarapu has also participated in many All-India Radio National Programs, Sangeetha Sammelanams and composed and conducted orchestras, in classical music both in Radio and Television. He has also composed many varnams and krithis that have been appreciated by the audience.

4. Shri Annavarapu's most notable and noble contribution to the music is that continuing the tradition of Gurukula Sampradaya, he nurtured many a talent for about seven decades without charging anything either in cash or kind from his disciples and untiringly strove hard to bring the best out of them. He taught not only violin but also vocal, veena, flute and Nadaswaram. He always encouraged his disciples to hone the innate bani or style that is natural to them and never forced them to adapt a particular style. It is to his credit that most of his disciples are top graded and recognized in the field of music.

5. Shri Annavarapu has been associated with various organizations like Member, Board of Studies in Music, Telugu University, Hyderabad; Member, Board of Studies in Music, All India Radio, New Delhi; Member, Board of Music for Audition, AIR, New Delhi; Member, Advisory Committee, AIR, Vijayawada; Member, Nada Neerajanam Program Committee, TTD, Titupathi; Member, Sri Thyaga Brahma Utsava Committee, Ttruvayyur, Tamilnadu; Member, South Zone Cultural Center, Tanjavur; Member, Board of Studies in Music, Datta Peetham, Mysore etc.

6. Shri Annavarapu has received various awards and honours including National Sangeetha Nataka Academy Award; Andhra Pradesh State Sangeetha Academy Award; Hamsa Award (Govt. of Andhra Pradesh); Prathibha Award (Potti Sriramulu Telugu University, Hyderabad, India); Honorable Doctorate from Duke University (North Carolina, USA); Life Time Achievement Award by Rotary International, Vijayawada; Sangeetha Kalasagar Award (Sangeeta Kalasaagaram, Hyderabad); Datta Peetha Award (Sree Dattha Peetham, Mysore, Karnataka); Sri Durga Malleswara Devasthanam Astana Vidwan (Vijayawada) etc.



श्री अन्नवरपू रामस्वामि

श्री अन्नवरपू रामस्वामि जिन्हें प्यार से अन्नावरपु कहा जाता है, भारत में कर्नाटक संगीत के एक प्रख्यात शीर्ष-श्रेणी के वायलिन वादक हैं। उनकी संगीत यात्रा आठवें दशक में प्रवेश कर चुकी है। वह संत त्यागराज की शिष्य-परम्परा की पांचवी पीढ़ी से सम्बंध रखते हैं।

2. 23 मार्च, 1926 को आंध्र प्रदेश के एक संगीतकार परिवार में जन्मे श्री अन्नवरपू ने अल्पायु में संगीत सीखना शुरू किया। उन्होंने पहले आंध्र प्रदेश के अपने पैतृक गांव सोमावरप्पडु के स्वर्गीय श्री मंगति जगन्नाथ चौधरी से और बाद में विजयवाड़ा के प्रख्यात संगीतज्ञ और गुरु, गायक सार्वभौमातते श्री पारुपल्ली राम कृष्णैया पंतुलु से संगीत की शिक्षा ग्रहण की। गुरुकुल सम्प्रदाय में प्राप्त कठोर प्रशिक्षण ने उन्हें भारत का एक सर्वाधिक पसंदीदा वायलिन वादक बनने में मदद की। उन्होंने वर्ष 1948 में आकाशवाणी, विजयवाड़ा की स्थापना होने के बाद से इसके कर्मचारी कलाकार के रूप में काम किया। वह वर्ष 1986 में अपनी सेवानिवृत्ति तक वहीं कार्य करते रहे।

3. श्री अन्नवरपू ने अपनी शानदार संगीत-यात्रा के दौरान, भारत के प्रत्येक विख्यात संगीतकार को संगत प्रदान की जिनमें पारुपल्ली रामकृष्णैया पंतुलु, अरियाकुडी रामानुज अयंगार, चेम्बई वैद्यनाथ भागवतार, महाराजपुरम विश्वनाथ अय्यर, सेम्मांगुडी श्रीनिवास अय्यर, जी.एन. बालसुब्रमणियम, मदुरै मणि अय्यर, बालमुरली कृष्ण, टी.आर. महालिंगम, एलाथुर बंधु आदि कर्नाटक संगीत के दिग्गज ही नहीं बल्कि पंडित विनायक राव पटवर्धन, भीमसेन जोशी और पंडित जसराज जैसे प्रख्यात हिंदुस्तानी गायक भी शामिल हैं। श्रुति और लय पर उनकी निपुणता और संगत के उच्च कौशल के द्वारा उन्होंने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में मुख्य कलाकार की मदद की और वह कई संगीतकारों के लिए पसंदीदा वायलिन वादक बन गए। उन्होंने भारत और विदेश में वायलिन और वायोला दोनों पर अनगिनत एकल संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, फ्रांस, ओमान, बहरीन, दुबई, दोहा, सिंगापुर, मलेशिया और श्रीलंका आदि में भी वायलिन वादन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया है। उन्होंने आकाशवाणी के कई राष्ट्रीय कार्यक्रम, संगीत सम्मेलन में भाग लिया तथा रेडियो और टेलीविजन दोनों पर शास्त्रीय संगीत में ऑर्केस्ट्रा के लिए संगीत रचना की और उसका संचालन किया। उन्होंने अनेक वर्णम और कृतियों की भी रचना की है जिन्हें दर्शकों ने सराहा है।

4. श्री अन्नवरपू का संगीत में सबसे उल्लेखनीय और श्रेष्ठ योगदान यह है कि उन्होंने गुरुकुल सम्प्रदाय की परंपरा को जारी रखते हुए, लगभग सात दशक तक अपने शिष्यों की प्रतिभा को निखारा है और उनसे नकद या किसी रूप में कुछ नहीं लिया है। उन्होंने न केवल वायलिन बल्कि गायन, वीणा, बांसुरी और नादस्वरम भी सिखाया। उन्होंने सदैव अपने शिष्यों को सहज बानी या शैली को निखारने के लिए प्रोत्साहित किया और कभी भी उन्हें किसी विशेष शैली को अपनाने के लिए बाध्य नहीं किया। उनके अधिकांश शिष्य शीर्ष श्रेणी के कलाकार हैं और संगीत के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त हैं, और इसका श्रेय उन्हीं को जाता है।

5. श्री अन्नवरपू बोर्ड ऑफ स्टडीज इन म्यूजिक, तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद, बोर्ड ऑफ स्टडीज इन म्यूजिक, आकाशवाणी, नई दिल्ली; बोर्ड ऑफ म्यूजिक इन ऑडिशन, आकाशवाणी, नई दिल्ली; सलाहकार समिति, आकाशवाणी, विजयवाड़ा; नाद नीरजनम प्रोग्राम कमेटी, टीटीडी, तितुपथी; श्री त्याग ब्रह्मा उत्सव कमेटी, तिरुवाय्यूर, तमिलनाडु; दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावुर; बोर्ड ऑफ स्टडीज इन म्यूजिक, दत्त पीठम, मैसूर आदि विभिन्न संगठनों के सदस्य रहे हैं।

6. श्री अन्नवरपू को विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; आंध्र प्रदेश राज्य संगीत अकादमी पुरस्कार; हंस अवार्ड (आंध्र प्रदेश सरकार); प्रतिभा पुरस्कार (पोद्दी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद, भारत); ड्यूक यूनिवर्सिटी (नॉर्थ कैरोलिना, यूएसए) से डॉक्टरेट की मानद उपाधि; रोटरी इंटरनेशनल, विजयवाड़ा द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड; संगीत कलासागर पुरस्कार (संगीत कलासागरम, हैदराबाद); दत्त पीठ पुरस्कार (श्री दत्त पीठम, मैसूर, कर्नाटक); श्री दुर्गा मल्लेश्वर देवस्थानम अस्तान विद्वान (विजयवाड़ा) आदि शामिल हैं।